



सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में स्त्री के विविध रूप

मोनीका कुमारी¹, डॉ॰ रेखा कुमारी²

शोधार्थी हिन्दी विभाग राम लखन सिंह कॉलेज बख्तियारपुर पटना।

शोध निर्देशक सहायक प्राचार्य हिन्दी विभाग राम लखन सिंह कॉलेज बख्तियारपुर पटना।

प्रस्तावना

सुभद्रा कुमारी चौहान हिन्दी साहित्य की प्रमुख कवयित्री और लेखिका रही हैं। उनका लेखन सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों पर गहरी दृष्टि प्रदान करता है। उनके साहित्य में स्त्री जीवन के विविध रूपों का वर्णन प्रमुखता से मिलता है। इस शोध पत्र में सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में स्त्री के विभिन्न रूपों की जांच की जाएगी और उनकी समाज में स्थिति का विश्लेषण किया जाएगा। आधुनिक युग में सुभद्रा कुमारी चौहान जी एक मात्र महिला कवयित्री हैं जिनके काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर विद्यमान है। उन्होंने भारत माता की पुकार सुन रक्षा करने के लिए स्वयं प्रस्तुत हो जाती हैं सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में स्त्री के विविध रूपों का विस्तृत वर्णन है। उनकी कहानियाँ समाज में स्त्रियों की विभिन्न भूमिकाओं और उनकी स्थिति को उजागर करती हैं। इन कहानियों के माध्यम से सुभद्रा कुमारी चौहान ने नारी जीवन रूप को प्रदर्शित करती हैं जिसमें त्याग और समर्पण की भावना निहित होती है।

स्त्री के विविध रूपः

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में स्त्री के विविध रूपों का चित्रण न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है बल्कि यह तत्कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति उनके संघर्ष और उनकी उपलब्धियों को भी दर्शाता है। उनके द्वारा प्रस्तुत विभिन्न स्त्री पात्र हमें यह समझने में मदद करते हैं कि स्त्रियाँ न केवल परिवार और समाज की रीढ़ हैं बल्कि वे समाज सुधार और देश की स्वतंत्रता में भी अहम भूमिका निभाती हैं। इस प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाएँ स्त्री की शक्ति साहस और समर्पण की जीवंत मिसालें हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों का अध्ययन हमें तत्कालीन समाज की स्त्रियों की स्थिति और उनकी समस्याओं को समझने में मदद करता है।

स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी: सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली स्त्रियों के साहस और बलिदान को विशेष रूप से उकेरा है। उनकी रचना "झाँसी की रानी" में रानी लक्ष्मीबाई का वीरतापूर्ण चित्रण इसका प्रमुख उदाहरण है। इस कविता में स्त्री का रूप एक योद्धा के रूप में सामने आता है जो अपने देश के लिए प्राणों की आहुति देने को तत्पर है।

सामाजिक परिवर्तन की दिशा में अग्रसर स्त्री: उनकी कहानियों में स्त्री को सामाजिक परिवर्तन की दिशा में अग्रसर दिखाया गया है। "वीरों का कैसा हो वसंत" जैसी रचनाओं में स्त्री की भूमिका एक प्रेरणास्रोत के रूप में देखी जा सकती है। यहाँ स्त्री का रूप समाज को जागरूक करने और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ने वाली के रूप में उभरता है।

पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन: सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने वाली स्त्री का चित्रण भी प्रमुखता से मिलता है। "मंजरी" कहानी में एक माँ के रूप में स्त्री का चित्रण किया गया है जो अपने बच्चों के भविष्य के लिए संघर्ष करती है। यह स्त्री के सहनशीलता और समर्पण का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

प्रेम और त्याग की मूर्ति: उनकी कहानियों में प्रेम और त्याग की मूर्ति के रूप में भी स्त्री का चित्रण मिलता है। "माँ" जैसी कहानियों में स्त्री का रूप एक ऐसी महिला के रूप में उभरता है जो अपने परिवार और समाज के लिए अपने व्यक्तिगत इच्छाओं और सपनों का त्याग करती है।

सशक्त स्त्री: सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में स्त्री का सशक्त रूप उभरकर आता है। उनकी कहानी "झाँसी की रानी" में रानी लक्ष्मीबाई का चरित्र नारी शक्ति और साहस का प्रतीक है। रानी लक्ष्मीबाई न केवल अपने राज्य के लिए बल्कि पूरे देश के लिए लड़ती हैं और उनकी वीरता और साहस आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं।

मातृत्व का स्वरूप: सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में मातृत्व के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर किया गया है। उनकी कहानी "माँ" में एक माँ के त्याग, समर्पण और प्यार का वर्णन है। इस कहानी में माँ अपने बच्चों के सुख-दुख में साथी बनकर खड़ी रहती है और उनके उज्वल भविष्य के लिए कठिनाइयों का सामना करती है।

सामाजिक प्रतिबंधों से जूझती स्त्री: सुभद्रा कुमारी चौहान ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों और परंपराओं के खिलाफ स्त्री के संघर्ष को भी प्रस्तुत किया है। उनकी कहानी "बूढ़ी काकी" में एक वृद्धा महिला की स्थिति का वर्णन किया गया है जो समाज के अत्याचारों और उपेक्षा का शिकार होती है। यह कहानी समाज के उन कड़वे सत्य को उजागर करती है जिनमें महिलाएं अक्सर पिसती हैं।

शिक्षित और जागरूक स्त्री: सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में शिक्षित और जागरूक स्त्रियों का भी वर्णन है। उनकी कहानी "विद्या का आदान-प्रदान" में एक शिक्षित महिला का चित्रण है जो शिक्षा के महत्व को समझती है और अपने परिवार और समाज में इसके प्रसार के लिए प्रयासरत रहती है।

प्रेम और समर्पण का प्रतीक: सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में प्रेम और समर्पण के रूप में स्त्री का एक और रूप देखने को मिलता है। उनकी कहानी "सच्चा प्रेम" में नायिका अपने प्रेमी के प्रति अपने समर्पण और प्रेम का प्रदर्शन करती है। यह कहानी प्रेम के उच्चतम रूप को प्रदर्शित करती है जिसमें त्याग और समर्पण की भावना निहित होती है।

सबल पुरूष यदि भीरू बने तो हमको दे वरदान सखी अबलाएँ उठ पड़ें देश में करें युद्ध घमसान सखी! पन्द्रह कोटि असहयोगियाँ दहला दें ब्रह्मण्ड सखी। भारत-लक्ष्मी लौटाने को रच दें लंका काण्ड सखी।¹ सुभद्रा कुमारी चौहान ने 1857 की क्रांति की याद को पुनः अपनी कविता झाँसी की रानी में तरोजा कर देती हैं।

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी
 बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी
 गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थीं
 दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी
 चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
 बुन्देले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
 खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थीं।।"²

इस कविता के माध्यम से सुभद्रा जी ने भारतवासियों को महारानी लक्ष्मीबाई के वीरता एवं शौर्य की याद दिलायीं। वे याद दिलाती हैं कि किस तरह अकेली ही रानी लक्ष्मीबाई ने फिरंगियों के छक्के छुड़ा दिये। लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार" आज फिर से उसी ओज एवं वीरता के साथ सभी देशवासियों को एकजुट होकर पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए।

विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र पाप से असहयोग ले ठान।

गुँजा डालें स्वराज्य की तान और सब हो जायें बलिदान।"³

यह श्लोक एक आह्वान है जो मातृभूमि के वीर पुत्रों को पाप और अन्याय के खिलाफ खड़े होने के लिए प्रेरित करता है। आइए इसे पंक्ति दर पंक्ति समझते हैं:

विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र पाप से असहयोग ले ठान।

विजयी माँ के वीर पुत्र पाप के साथ असहयोग करने का संकल्प लें।"

यह पंक्ति वीर पुत्रों को पाप और अन्याय के खिलाफ खड़े होने और असहयोग करने के लिए प्रेरित करती है।

गुँजा डालें स्वराज्य की तान और सब हो जायें बलिदान।

स्वराज्य की तान गुँज उठे और सभी बलिदान के लिए तैयार हो जाएं।"

यह पंक्ति स्वराज्य (स्व-शासन) की आवाज को बुलंद करने और सभी को देश के लिए बलिदान देने के लिए प्रेरित करती है। समग्र रूप से यह श्लोक कर्तव्य देशभक्ति और बलिदान की भावना को जागृत करता है और अन्याय के खिलाफ लड़ने और स्वतंत्रता और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

सुभद्रा जी देशवासियों को कर्तव्यबोध करती है-

जरा ये लेखनियाँ उठ पड़े

मातृ-भू को गौरव से मढ़े

करोड़ों क्रान्तिकारिणी मूर्ति

पलों में निर्भयता से गढ़ें।।

हमारी प्रतिभा साध्वी रहे

देश के चरणों पर ही चढ़े।

अहिंसा के भावों में मस्त

आज यह विश्व जीतना पड़ें।⁴

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता मात्र समग्र राष्ट्रीय चेतना का प्रतिरूप है। यह न केवल राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति है बल्कि तत्कालीन समय के सामाजिक परिवेश के पैरों के निशान भी उनके साहित्य में परिलक्षित होते हैं। विपिनचन्द्र ने अपनी पुस्तक "आधुनिक भारत का इतिहास" में तद्युगीन समाज में व्याप्त अराजकता का वर्णन इस प्रकार किया है भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग और समूह ने धीरे-धीरे यह महसूस किया कि उनके हित अंग्रेज शासकों के हाथों में असुरक्षित हैं। किसान देख रहे थे कि सरकार जमीन की मालगुजारी के नाम पर उनकी उपज का एक बड़ा हिस्सा उनसे ले रही थी। सरकार और उसकी पुलिस उसकी अदालतें और अधिकारी सभी जमींदारों और भू-स्वामियों के समर्थक और रक्षक थे जो किसान से जमकर लगान वसूलते थे। वे व्यापारियों और सूदखोरों के रक्षक थे जो तरह-तरह से किसान

को धोखा देते उसका शोषण करते और उसकी जमीन छीन लेते थे। जब कभी किसान जमींदारों और सूदखोरों के दमन के खिलाफ उठ खड़े होते पुलिस और सेना कानून और व्यवस्था के नाम पर उन्हें कुचल दिया करती थी।"⁵

स्वतंत्रता संग्राम की बलिवेदी पर शहीद होने वाली रानी लक्ष्मीबाई को अपनी कविता द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सुभद्रा जी लिखती हैं:

आओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी।"⁶

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने ओजस्वी स्वर और राष्ट्रीय भावना से भरी कविताओं के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति अपने विचारों को व्यक्त किया। उनकी कविता "राखी की चुनौती" में वे बहादुरी साहस और देशभक्ति की भावना को व्यक्त करते हुए लिखती हैं:

अबला न समझोए राखी की है लाजए
वीरों के साथ निभाऊँगी आज।
बाँधूँगी राखीए करूँगी संकल्पए
भारत माँ की सेवा में सदा रहूँ तल्लीन।"

इस कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान ने बहनों की बहादुरी और उनके संकल्प को दर्शाया है जो अपने भाइयों की तरह देश की रक्षा के लिए समर्पित हैं। "राखी की चुनौती" कविता में वे इस विचार को प्रकट करती हैं कि महिलाएँ भी स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं और अपने देश की रक्षा के लिए किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ हमारे स्वतंत्रता संग्राम के समय की परिस्थितियों और सामाजिक परिवेश को जीवंत रूप में प्रस्तुत करती हैं और उन्होंने राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

"मेरा बंधु माँ की पुकारों को सुनकर के तैयार हो जेल खाने गया है।

छिनी हुई माँ की स्वाधीनता को वह जालिम के घर से लाने गया है।"⁷

यह कविता सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई है और इसमें एक गहरी देशभक्ति की भावना व्यक्त की गई है। आइए इसे पंक्ति दर पंक्ति समझते हैं:

मेरा बंधु माँ की पुकारों को सुनकर के तैयार हो जेल खाने गया है।"

इस पंक्ति में "बंधु" (भाई) एक प्रतीक है उन वीर स्वतंत्रता सेनानियों का जो भारत माता की पुकार सुनकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए तैयार हुए और जेल जाने से भी नहीं डरे।

छीनी हुई माँ की स्वाधीनता को वह जालिम के घर से लाने गया है।।"

इस पंक्ति में "जालिम" ब्रिटिश शासकों का प्रतीक है जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता को छीन लिया था। यहाँ कवयित्री कह रही है कि उसका भाई उन जालिमों से स्वतंत्रता वापस लाने के लिए उनके खिलाफ लड़ने गया है। यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष और उसमें भाग लेने वाले सेनानियों के बलिदान को चित्रित करती है। यह उन वीरों के साहस और देशप्रेम को सलाम करती है जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में भी संकोच नहीं किया।

इनकी कविताओं में हुंकार है जो भारतवासियों को निर्भीकतापूर्वक स्वतंत्रता की बलिवेदी पर चढ़ जाने के लिए प्रेरित करती है-

हमें नहीं भय संगीनों का चमक रहीं जो उनके हाथ।

जरा नहीं डर उन तोपों का गरज रहीं जो बल के साथ।।

ढीठ सिपाही की हथकड़ियाँ दमन नीति के वे कानून।

डरा नहीं सकते हैं हमको यद्यपि बहावें प्रतिदिन खून।।"⁸

आइए इसे पंक्ति दर पंक्ति समझते हैं:

"हमें नहीं भय संगीनों का चमक रहीं जो उनके हाथ।"

"हमें उन संगीनों का भय नहीं है जो उनके हाथों में चमक रही हैं।"

इस पंक्ति में कवयित्री कहती है कि हमें अंग्रेजी सैनिकों के हथियारों का कोई डर नहीं है चाहे वे कितने ही खतरनाक क्यों न दिखें।

"जरा नहीं डर उन तोपों का गरज रहीं जो बल के साथ।।"

"हमें उन तोपों का भी कोई डर नहीं है जो पूरी ताकत के साथ गरज रही हैं।"

यहाँ कवयित्री कहती है कि हमें अंग्रेजों की शक्तिशाली तोपों का भी डर नहीं है चाहे वे कितनी भी ताकतवर क्यों न हों।

"ढीठ सिपाही की हथकड़ियाँ दमन नीति के वे कानून।"

"ढीठ (अत्याचारी) सिपाही की हथकड़ियाँ और दमनकारी नीति के कानून।"

इस पंक्ति में कवयित्री उन सिपाहियों और कानूनों का उल्लेख करता है जो लोगों को दमन करने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं।

"डरा नहीं सकते हैं हमको यद्यपि बहावें प्रतिदिन खून।।"

"ये हमें डरा नहीं सकते भले ही प्रतिदिन खून बहाया जाए।"

यहाँ कवयित्री का कहना है कि इन हथकड़ियों कानूनों और रक्तपात के बावजूद हमें कोई डर नहीं है और हम अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ हैं। कुल मिलाकर इस कविता में कवयित्री ने स्वतंत्रता सेनानियों के अडिग साहस और संघर्ष को दर्शाया है। यह उन वीरों के हौसले को प्रकट करती है जो हर प्रकार के दमन और अत्याचार के बावजूद अपने देश की स्वतंत्रता के लिए अडिग रहे।

दो विजये! वह आत्मिक बल दो वह हुंकार मचाने दो।

अपनी निर्बल आवाजों से दुनिया को दहलाने दो।।

जय स्वतन्त्रिणी भारत-माँ यों कहकर मुकुट लगाने दो।

हमें नहीं इस भू-मंडल को माँ पर बलि-बलि जाने दो।"९

यह कविता राष्ट्रीय चेतना और आत्मबल की प्रेरणा का प्रतीक है। आइए इसे पंक्ति दर पंक्ति समझते हैं:

दो विजये! वह आत्मिक बल दो वह हुंकार मचाने दो।"

हे विजयिनी! हमें वह आत्मिक बल दो वह हुंकार (गर्जना) मचाने दो।"

इस पंक्ति में कवयित्री विजयिनी (विजयी) देवी या मातृभूमि से प्रार्थना कर रहे हैं कि उन्हें आत्मिक शक्ति और साहस प्रदान करें ताकि वे गर्जना कर सकें और अपनी आवाज बुलंद कर सकें।

अपनी निर्बल (कमजोर) आवाजों से दुनिया को दहलाने दो।"

यहाँ कवयित्री कहती है कि भले ही उनकी आवाज कमजोर हो लेकिन वे चाहते हैं कि उनकी आवाज इतनी प्रभावशाली हो कि पूरी दुनिया हिल जाए।

जय स्वतन्त्रिणी भारत-माँ कहकर उसे मुकुट पहनाने दो।"

इस पंक्ति में कवयित्री चाहते हैं कि वे स्वतंत्र भारत माता की जयकार करें और उसे सम्मानित करें जैसे उसे विजयी का मुकुट पहनाया जा रहा हो।

हमें नहीं इस भू-मंडल को माँ पर बलि-बलि जाने दो।"

यहाँ कवयित्री कहती है कि उन्हें व्यक्तिगत बलिदान की परवाह नहीं है बल्कि वे चाहते हैं कि पूरी दुनिया भारत माता के लिए बलिदान देने को तैयार हो।

कुल मिलाकर यह कविता एक प्रेरणादायक और देशभक्ति से भरी प्रार्थना है। इसमें कवयित्री अपनी मातृभूमि से आत्मिक शक्ति साहस और दृढ़ता की मांग करता है ताकि वे स्वतंत्रता की लड़ाई में अपनी कमजोर आवाजों को भी दुनिया के लिए प्रभावशाली बना सकें। यह भारत माता के लिए बलिदान देने की अटूट भावना और संकल्प को दर्शाता है।

भारत में कई प्रदेश हैं अनेक भाषाएँ हैं विभिन्न आचार-विचार हैं विविध श्रद्धा-विश्वास हैं कई जातियाँ और सम्प्रदाय हैं और भिन्न-भिन्न रीति-रिवाज हैं। यहाँ व्यक्ति अपने विश्वास के अनुसार चलने के लिए स्वतंत्र है। अपने विश्वास पर चलते हुए दूसरों के विश्वास का आदर करना और इन तमाम विविधताओं के पीछे के सर्वमान्य तत्व को स्वीकार करना पूरे देश को एक इकाई के रूप में मानकर इसके प्रति प्रेम निष्ठा एवं समर्पण भाव रखना ही राष्ट्रीयता है। राष्ट्रीयता का मूल मंत्र एकात्मकता है।¹⁰

सुभद्रा कुमारी चौहान अपनी कविताओं के माध्यम से नवयुवकों और नवयुवतियों में एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार करती हैं ताकि वे भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिए प्रेरित हो सकें। उनकी कविताएँ राष्ट्र की आन-बान और हमारी स्वतंत्रता के प्रतीक तिरंगे ध्वज को लेकर ओजस्वी और प्रभावशाली स्वर में गूँज उठती हैं।

रणभेरी का नाद सदा हो क्या अब रूक जायेगा
जिसको ऊँचा किया वही क्या झंडा झुक जायेगा
हैं संतप्त तदपि आशा से स्वागत आज तुम्हारा
एक बार फिर कह दो झंडा ऊँचा रहे हमारा।।"¹¹

यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के उत्साह और अडिग संकल्प को प्रकट करती है। आइए इसे पंक्ति दर पंक्ति समझते हैं:

रणभेरी का नाद सदा हो क्या अब रूक जायेगा"

रणभेरी (युद्ध की ध्वनि) की आवाज हमेशा गूँजती रहे क्या अब यह रुक जाएगी इस पंक्ति में कवयित्री रणभेरी की निरंतरता की बात कर रहे हैं और यह सवाल कर रहे हैं कि क्या यह युद्ध की ध्वनि अब थम जाएगी। यह स्वतंत्रता संग्राम की निरंतरता की ओर इशारा करता है।

जिसको ऊँचा किया वही क्या झंडा झुक जायेगा"

जिस झंडे को ऊँचा रखा गया है क्या वह अब झुक जाएगा"

इस पंक्ति में कवयित्री यह सवाल उठा रहे हैं कि क्या वह झंडा जो स्वतंत्रता की प्रतीक के रूप में ऊँचा रखा गया है अब झुक जाएगा। यह संकल्प और देशभक्ति की भावना को दर्शाता है।

हैं संतप्त तदपि आशा से स्वागत आज तुम्हारा"

हम दुःख में हैं लेकिन फिर भी आशा के साथ आज तुम्हारा स्वागत है।"

इस पंक्ति में कवयित्री यह व्यक्त कर रहे हैं कि भले ही देश कठिन परिस्थितियों में होए लेकिन आशा और विश्वास के साथ वे स्वागत कर रहे हैं।

एक बार फिर कह दो झंडा ऊँचा रहे हमारा।।"

एक बार फिर कह दो कि हमारा झंडा ऊँचा रहे।"

इस पंक्ति में कवयित्री सभी को एक बार फिर यह संकल्प लेने के लिए कह रहे हैं कि स्वतंत्रता के प्रतीक झंडे को ऊँचा बनाए रखें और उसके प्रति निष्ठा बनाए रखें। यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संकल्प आशा और देशभक्ति की भावना को प्रकट करती है। कवयित्री यह प्रेरणा देते हैं कि रणभेरी की आवाज हमेशा गूँजती रहे और हमारे राष्ट्रीय ध्वज को ऊँचा बनाए रखा जाए चाहे कैसी भी स्थिति हो।

स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता जलियावाँला बाग में बंसत में मार्मिक वेदना का सचित्र वर्णन प्रस्तुत करती हैं-

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खा कर।

कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।।

आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए है।

अपने प्रिय-परिवार देश से भिन्न हुए हैं।।¹²

यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के दौरान शहीद हुए युवाओं और उनके बलिदानों की भावनात्मक और दारुण तस्वीर प्रस्तुत करती है। आइए इसे पंक्ति दर पंक्ति समझते हैं:

"कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा-खा कर।"

"यहाँ कोमल और मासूम बच्चे गोली खाकर मरे हैं।"

इस पंक्ति में कवयित्री उन निहत्थे और मासूम बच्चों की स्थिति का वर्णन कर रहे हैं जिन्होंने संघर्ष के दौरान गोलीबारी का सामना किया और अपनी जान गंवाई।

"कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।।"

"उनके लिए कुछ फूल गिराकर लाना काफी नहीं है।"

यहाँ कवयित्री यह कह रहे हैं कि केवल फूल चढ़ाना या श्रद्धांजलि अर्पित करना शहीदों की शहादत की कीमत नहीं चुका सकता। इसे अधिक गंभीरता से लेने की आवश्यकता है।

"आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए है।"

"उनके आशाओं से भरे हुए हृदय भी चूर-चूर हो गए हैं।"

इस पंक्ति में कवयित्री उन लोगों की भावनाओं को व्यक्त कर रहे हैं जिनकी आशाएँ और सपने इस संघर्ष के दौरान चूर-चूर हो गए हैं।

"अपने प्रिय-परिवार देश से भिन्न हुए हैं।।"

"वे अपने प्रिय परिवार और देश से अलग हो गए हैं।"

इस पंक्ति में कवयित्री यह व्यक्त कर रहे हैं कि शहीदों ने अपने परिवार और देश से अंतिम विदाई ले ली है और अब वे उनकी दुनिया से भिन्न हो गए हैं। कुल मिलाकर यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के दौरान शहीद हुए युवाओं की दुःखद और कष्टदायक स्थिति को चित्रित करती है। यह उन बलिदानों की गहराई को प्रकट करती है और इस बात को रेखांकित करती है कि केवल श्रद्धांजलि अर्पित करना उनकी शहादत का उचित सम्मान नहीं है। इस हत्याकाण्ड से पूरा देश दहल उठा था। सुभद्रा कुमारी चौहान वास्तव में 1857 की झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के अवतार की तरह थीं जिन्होंने अपनी अदम्य उत्साह और क्रांतिकारी साहित्य के माध्यम से भारतीय जनमानस को जागरूक और प्रेरित किया। उनके क्रांतिकारी साहित्य को युगों-युगों तक याद किया जाएगा। उनका सम्पूर्ण काव्य-सृजन कालजयी है यह न केवल उनके समय में प्रासंगिक था बल्कि आज भी प्रासंगिक है और भविष्य में भी रहेगा।¹³

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय भावधारा की शीर्षस्थ हैं। उनके काव्य में मध्यकालीन भक्ति भावना एवं आधुनिक राष्ट्रीयता का अद्भुत संगम परिलक्षित होता है। श्लोहे को पानी कर देना कविता में उन्होंने अपने को देश प्रेम देश वत्सलता एवं देशभक्ति के साथ जोड़ा है। वे प्रभु से प्रार्थना करती है जब-जब भारत पर संकट आया जब असुरों का अत्याचार बढ़ा मानवता का अपमान हुआ और दानवता का जाल फैल गया तब-तब करुणा से भरे हुए करुणाकर ने अवतार लिया। उन्होंने असहायों की मदद की और दानवों का संहार किया ताकि मानवता को फिर से सम्मान और सुरक्षा मिल सके।¹⁴

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में देशभक्ति जन अस्मिता और राष्ट्रीयता का ओजस्वी वेग और विस्तार नजर आता है। सुभद्रा जी खुद को पूरी तरह देश के लिए समर्पित कर चुकी थीं और उनके अद्भुत रचना कौशल ने लोगों को हमेशा उत्साहित किया। वे कभी देश की रक्षा के लिए रणबांकुरों को प्रेरित करतीं और बलिदान के गीत गातीं तो कभी देश पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ क्रांति और विद्रोह का आह्वान करतीं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सिद्धांतों और उनकी राष्ट्रीय नीतियों का भी सुभद्रा जी पर गहरा प्रभाव पड़ा। गांधीजी की अहिंसावादी प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर उन्होंने अपने लेखन को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। अपने लेखन में सुभद्रा जी ने परतंत्र भारत की यातनाओं और व्यथाओं को बेबाकी से उकेरा है और स्वतंत्र भारत को एक दिव्य शक्ति मानकर उसकी आराधना की है। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में देशभक्ति जन अस्मिता और राष्ट्रीयता का एक अद्वितीय ओज और विस्तार देखने को मिलता है। वे पूरी तरह से देश के प्रति समर्पित थीं और अपने अद्भुत रचनात्मक कौशल से जन-जन को प्रेरित करती

रहीं। उनकी कविताएँ कभी देश की रक्षा के लिए रणबांकुरों को प्रेरित करतीं और बलिदान के गीत गातीं तो कभी देश पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ क्रांति और विद्रोह का आह्वान करतीं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सिद्धांतों और उनकी राष्ट्रीय नीतियों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। गांधीजी की अहिंसावादी विचारधारा से प्रेरित होकर सुभद्रा जी ने अपने लेखन को एक शक्तिशाली हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। उनके लेखन में परतंत्र भारत की यातनाओं और व्यथाओं को उजागर किया गया है और स्वतंत्र भारत को एक दिव्य शक्ति मानकर उसकी पूजा की गई है। परतंत्रता के दिनों में एक महिला होते हुए सुभद्रा कुमारी चौहान ने जिस निर्भीकता और स्पष्टता का परिचय दिया वह कहीं और दुर्लभ है। उनकी यह ओजस्विता भाषा की सशक्तता और मुखरता वंदनीय है। यही कारण है कि उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम राष्ट्र-कोकिला की उपाधि से सम्मानित किया गया है। उनके साहित्य में एक ऐसी शक्ति है जो तीर तलवार बंदूक और बम में भी नहीं मिलती। उनकी कविताएँ और लेखन मुर्दों में भी जीवन का संचार कर सकती हैं और इस तरह से वे एक अनूठी प्रेरणा का स्रोत बन जाती हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान एक वीर स्वतंत्रता सेनानी और महान कवयित्री थीं जिन्होंने अपनी ओजस्वी कविताओं के माध्यम से देशभक्तों रणबांकुरों और समर्पित युवाओं को जगाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। वे जीवनभर आदर्शवाद के हथियार से वंचितों और उत्पीड़ितों के अधिकारों के लिए संघर्ष करती रहीं जबकि उनके सामने खड़ी ताकतें धर्म कानून पूंजी और समाज का ठेका समझती थीं। उनके लिए सामाजिक विषमता के मुकाबले स्वार्थ ही प्राथमिक था। सुभद्रा जी का वैचारिक और सृजनात्मक विकास इसी वास्तविकता पर आधारित था। उनकी सोच ने एक स्वस्थ और स्वतंत्र मार्ग खोजा। हर चुनौती के सामने वे मजबूती से खड़ी रहीं और अपने अंतःकरण की सच्चाई को हर स्थिति में प्रकट किया।¹⁵

जब सुभद्रा कुमारी चौहान राजनीति में सक्रिय थीं तो उन दिनों राजनीति में सक्रिय महिलाओं की संख्या बहुत कम थी। वे सिर्फ एक राजनेता ही नहीं थीं बल्कि एक संवेदनशील साहित्यकार भी थीं। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान मध्यप्रान्त के राजनीतिक परिदृश्य में उनकी भूमिका को हमेशा कृतज्ञता से याद किया जाएगा। सुभद्रा जी जो देश की पहली सत्याग्रही थीं ने अपने संघर्ष अडिग आत्मबल और आर्थिक कठिनाइयों को भी एक आनंदपूर्ण लहर की तरह महसूस किया। यह भावना उन्हें एक साधारण गृहस्थिन और कवयित्री से कहीं ऊपर उठा देती है। उनका उदाहरण दर्शाता है कि कैसे घर-परिवार की कठिन परिस्थितियों के बावजूद राष्ट्रधर्म के लिए संघर्ष की सीमाओं को पार किया जा सकता है।¹⁶

सुभद्रा जी ने यह साबित किया कि समर्पण और साहस से किस प्रकार बड़े से बड़े संघर्षों का सामना किया जा सकता है। सुभद्रा कुमारी चौहान एक ऐसी कवयित्री थीं जो राष्ट्रीय भावधारा को अपनी कविताओं में समेटती थीं। देश की गुलामी ने उन्हें गहरे तक प्रभावित किया था। वीर सेनानियों की शहादत की स्मृतियाँ बार-बार उन्हें झकझोरती रहती थीं। उनकी कविता "जलियाँवाला बाग में वसंत" में वे भावनात्मक रूप से कहती हैं:

आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना।

यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।।"

सुभद्रा जी की राष्ट्रीय कविताओं की सरसता और सरलता उनके पारिवारिक जीवन से जुड़ी रचनाओं में भी दिखाई देती है। उनके काव्य को उनके पारिवारिक जीवन से अलग नहीं किया जा सकता और यही पारिवारिकता उनके काव्य में

मधुरता और पूर्णता का गुण उत्पन्न करती है। राष्ट्रीयता सुभद्रा जी के लिए एक गहरी भावना और जज़्बा थीए जो समग्र राष्ट्र के गुणगान का प्रतीक थी। यह एक ऊर्जा और अनुगूँज हैए जिसमें समर्पण का भाव बसा हुआ है। यहाँ पर देश का भूगोलए इतिहास और संस्कृति एक रूप में उभरती है। राष्ट्रीयता का मतलब है देश का वंदन और अभिनंदनए और इस पावन माटी का हर कण पूजा का स्थल माना जाता है। इस भूमि की रजए स्वर्ग से भी अधिक महत्वपूर्ण है।¹⁷

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम को पूरी शिद्धत से जीया और भारतीय जनमानस को इसके लिए तैयार करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिस तरह राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने आंदोलन के माध्यम से देश को जागरूक कियाए सुभद्रा जी ने भी अपनी कविताओं और लेखन के जरिए यही कार्य किया। सुभद्रा जी की राष्ट्रीय भावना का स्रोत केवल कांग्रेसी आंदोलन नहीं थाए बल्कि यह जनता के बीच जगी राष्ट्रीय चेतना थीए जिससे वे पूरी तरह एकाकार थीं। इस चेतना की अभिव्यक्ति उनके काव्य साहित्य में अद्भुत संवेदनात्मक शक्ति के साथ हुई हैए जो उनकी रचनाओं को और भी प्रभावशाली बनाती है।

सहायक ग्रंथ सूची

1. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 81-82
2. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 56
3. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 92
4. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 93
5. आधुनिक भारत का इतिहास- विपिनचन्द्र पृ.सं.- 193
6. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 65
7. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 66
8. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 100
9. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 82
10. भारतीय साहित्य का राष्ट्रीय स्वर- सं. एवं सं० जगदीश तोमर पृ.सं.-79
11. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 133
12. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 71
13. लेख- राष्ट्रीय जागरण और सुभद्रा कुमारी चौहानए रामपत यादव पृ.सं.-61
14. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 171
15. सुभद्रा कुमारी चौहान की सम्पूर्ण कहानियाँ - डॉ. मधु शर्मा (परिचय से)
16. सुभद्रा समग्र पृ.सं.- 70
17. भारतीय साहित्य का राष्ट्रीय स्वर- सं. एवं सं० जगदीश तोमर पृ.सं.-61